International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 10 Issue 02, February 2020
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

माता–पिता के शैक्षणिक स्तर पर सृजनात्मक विकास पर प्रभाव

Mk- jhuk dqekjh
xg foKku foHkkx
Ckh-vkj-,- fcgkj fo'ofo|ky;] eq¶Qjij

भूमिका में :–

मानव ने कल्पना की रहस्यमय शक्ति को अलौकित सत्ता के रूप में स्वीकारते हुए महान कार्यों को दैवी शक्तियों का वरदान माना। सर्जन शीलता के प्रति भारतीयों का दृष्टिकोण आध्यात्मिक एवं आत्मनिष्ठा तत्वों के रूप में माना जाता है। कुमार स्वामी, 1924, मुल्यक राज आनन्द, 1933 ने स्वीकार किया कि सर्जन शीलता सिद्धांत के सम्बन्ध में भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टिकोणों में बहुत मतभेद है। सर्जन शीलता का पाश्चात सिद्धांत इसे आविष्कार शक्ति से संबद्ध मानता है और भारतीय परम्परा आध्यात्मिक आत्मज्ञान पर विशेष बल देता है। एक ऐसा भी समय था जब पूर्व एवं पश्चिम में सर्जनशील आनुवंशिक या दैबी अपवाद के रूप में माना जाता था। कभी किसी ने सर्जन शीलता को विकृतजन्य तरंग के रूप में और किसी ने इसे बुद्धि के प्रकार्य के रूप में स्वीकार किया मनौवैज्ञानिकों द्वारा सर्जनात्मक वीमा की पूर्णतः उपेक्षा की गई। गाल्टन की पुस्तक (हेरीडिटी जिनियस, 1869) से मानव योग्यताओं के वंश परम्परागत निर्धारकों पर कुछ प्रकाश अवश्य पड़ता है, किन्तु इन्होंने सर्जन शीलता की कोई धारणा नहीं प्रस्तुत की ।

सृजनात्मकता का अभिप्राय प्रायः मौलिकता से लगाया जाता है। सृजनात्मकता केवल विज्ञान के क्षेत्र तक सीमित नहीं है। वह किसी भी व्यक्ति के कार्य कलापों में पायी जा सकती है। चित्रकार की कलायें, वास्तुविद् की हस्तकला में, कवि तथा इतिहासकार, साहित्यकार की रचना में बहुतायत में हम सृजनात्मकता का उल्लेख करते हैं। लेकिन, सृजनात्मकता को इस आधार पर विशिष्ट वर्ग तक सीमित करना उचित नहीं है। प्रत्येक मनुष्य में सर्जनात्मकता की संभावनायें प्रायः निहित रहती हैं। आवश्यकता केवल उनके विकास की होती है। सृजनात्मकता के विकास के क्षेत्र में शिक्षण तथा अधिगम की महत्वपूर्ण भूमिका है।

सर्वप्रथम चैशला (1914) ने मौलिकता को मापने का प्रयास किया। ग्रहम वैलास 1926, की पुस्तक ''आर्ट ऑफ थौट'' में सर्जन शीलता से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण साहित्य प्राप्त होता है। हटचिन्सन 1931 ने इस तथ्य को प्रकाश में लाया कि दर्शन कला, रहस्यवाद तथा अन्तर्ज्ञान के क्षेत्र में पहले विचारकों ने कल्पना को किस प्रकार सर्जन शीलता के अंग के रूप में स्वीकार किया है। स्पियरमैन 1933 ने भी अपनी पुस्तक ''क्रियेटीव माइन्ड'' के माध्यम से मानव योग्यताओं का परिचय क्रमबद्ध रूप से कराया है। सर्जन शीलता में रूचि के सम्बन्ध में 1950 को एक नया मोड़ के रूप में माना जा सकता है। इसी वर्ष अमेरिका ने गिलफोर्ड 1950ए सर्जन शीलता में अपनी रूचि को सर्वप्रथम प्रदर्शित किया। उन्होंने सर्जन शीलता के चार सोपानों को प्रस्तावित किया उपक्रम, उद्भवन, प्रतिप्ति तथा विस्तारण। गिलफोर्ड ने अमेरिकन साइकोलौजिकल एसोसियेशन के समक्ष अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में सर्जन शीलता के विषय में अपना विचार प्रस्तुत किया और देश विदेश के उपस्थित प्रसिद्ध

मनोवैज्ञानिकों का ध्यान इस और आकर्षित किया। 1950 से ही सर्जन शीलता के सम्बन्ध में कई महत्वपूर्ण अनुसंधान हुए और सर्जन शीलता को विद्युत या ताप की भांति परिभाषित करना तो कठिन है परन्तु उसका वर्णन करना सरल है। विद्युत की भांति सर्जन शीलता का प्रत्यक्षीकरण तो नहीं किया जा सकता फिर भी लोगों ने विद्युत की भांति ही सर्जन शीलता की अभिव्यक्ति का अनुभव किया। सर्जन शीलता की उतनी ही परिभाषाएँ होंगी जितनी की इस प्रत्यय को करने वालों की संख्या की होगी। सामान्य रूप से सर्जन शीलता का अर्थ स्पष्ट करने के दृष्टिकोण से विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने इसकी परिभाषा अपने–अपने अनुसार सुनिश्चित किया है। सर्वप्रथम इसे व्यक्ति और मनोवैज्ञानिक विशेषताओं के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। इस आधार पर इसकी आलोचना की जा सकती है कि सर्जन शीलता के इस दृष्टिकोण का वैज्ञानिक अध्ययन कठिन है। इस उपागम में उपाख्यानात्मक विधियों का प्रयोग किया जाता है जो सर्वथा अवैज्ञानिक है।

रोजर्स 1959 का उत्पादनोन्मुख उपागम है। इन्होंने सर्जन शीलता को उत्पाद के रूप में परिभाषित किया है किन्तु इस उपागम की आलोचना घिसीलेन 1962, ने की है, ‘‘इस बात पर अब तक सहमति नहीं हो सकी है कि व्यवहार के किस रूप तथा किन कृतियों की किन विशेषताओं को वास्तव में सर्जनात्मक कहा जाय।’’

टारेन्स 1967, मैककिनान, 1962, घिसीलेन 1962, मेडनिक 1962, ने ‘‘सर्जन शीलता को एक प्रक्रिया के रूप में स्वीकारा है और उस परिस्थिति पर अपना ध्यान केन्द्रित किया है जिसमें उत्पादक एवं उत्पाद दोनों का योगदान रहता है।

बी.सी. गुड के अनुसार सृजनात्मकता विचार का वह स्वरूप है जो कि किसी समूह के विस्तृत सातत्य को निर्मित करता है। सृजनात्मकता के कारकों में साहचर्य, वैचारिक तीव्रता, मौलिक अनुकूलनशीलता, सात्यक लोच तथा तार्किक उद्विकास की योग्यता की विवेचना की जा सकती है।

मेडसिक के शब्दों में सृजनात्मकता चिंतन में साहचर्य के तत्व सम्मिलित रहते हैं जो किसी विशिष्ट आवश्यकता या किसी अन्य लाभ के लिए संयोग शील रहते हैं। नवीन संयोग के तत्व परस्पर जितने ही कम होंगे, प्रक्रिया या समाधान उतना ही अधिक सृजनशील होगा।

प्राक्कल्पना :–

शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा वातावरण से अनुकूलन करने में सफलता मिलती है। साथ ही व्यवहार में अनुकूल परिवर्तन भी होता है। जिससे अपना एवं अपने समाज का कल्याण करने में सफल होता है। डॉ0 राधाकृष्णन ने लिखा है कि ‘‘शिक्षा को मनुष्य और समाज का निर्माण करना चाहिए। इस कार्य को किये बिना शिक्षा अनुर्वर और अपूर्ण है।’’

बालकों के सर्वांगीण विकास में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका पायी जाती है। शिक्षा के क्षेत्र में धोरोकार्वे और गोपाल कृष्णा देवधर का आरंभिक युग से बहुत बड़ा योगदान रहा है। गुप्त काल में भी शिक्षा पर बल दिया गया है। हमारे राष्ट्रीय चिंतक महात्मा गाँधी, पंडित जवाहर लाल नेहरू, सरदार बल्लभ भाई पटेल ने भी शिक्षा के महत्व पर बल दिया है। देश में आजादी के काल से लेकर आज तक लगातार प्रयास जारी है। जिसके परिणाम स्वरूप अलग से प्रौढ़ एवं सतत शिक्षा अनौपचारिक शिक्षा, औपचारिक शिक्षा, साक्षरता मिशन अभियान

इत्यादि चालये गये हैं। इसके बावजूद भी शिक्षा में अभी और विस्तार की आवश्यकता है। सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी निरक्षरों की संख्या बहुतायत में पायी जाती है। शहरी क्षेत्रों में भी पूर्णतः शिक्षा का अभाव पाया गया है। यहाँ यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि माता–पिता के शिक्षा का बच्चों पर प्रभाव निश्चित रूप से पड़ता है। बच्चों के विकास पर इसका प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। बच्चों के विकास में माता–पिता के शिक्षा की भूमिका किस रूप में पायी जाती है इसे स्पष्ट करने के लिए इस पृष्टभूमि में यह प्राक्कल्पना किया जाता है कि उच्च शिक्षित माता–पिता के बच्चों में सृजनात्मक विकास मध्यम एवं निम्न शिक्षित माता–पिता के बच्चों से अधिक अनुकूल पाया जाएगा।

विधि :–

शैक्षणिक स्तर का मापन :–

अभिभावकों के शैक्षणिक स्तर के प्रभाव को निर्धारक तत्व के रूप में समाहित करने के पीछे सैद्धांतिक पृष्ठभूमि रही है कि शिक्षित तथा प्रबुद्ध माता–पिता अपने बच्चों को भी अद्यतन शैक्षणिक उपलब्धियों से पूर्ण करना चाहते हैं। अतः अपनी आर्थिक स्थिति की सीमा में उनकी सदैव इच्छा रहती है कि हमारे बच्चे को भी अच्छी से अच्छी शिक्षा प्राप्त हो जिसमें वह एक प्रबुद्ध नागरिक बन सके। इस उद्देश्य से अपने बच्चे के अभियोजन को एक आलोचक की दृष्टि से देखते हैं। वस्तुतः यह प्रक्रिया यदि बचपन से ही प्रारंभ हो तो शायद ही किसी बच्चे का अभियोजन विकृत होगा। लेकिन वर्तमान सामाजिक परिवेश में कभी–कभी इसका विपरीत परिणाम भी देखा जाता है। अर्थात् ऐसे भी उदाहरण दृष्टिपक्ष में आते है जहाँ अत्यन्त शिक्षित परिवार के ही बच्चे का सामाजिक अभियोजन दूषित हो जाता है।

वे ही अधिक असामाजिक व्यवहार करते पाये जाते हैं तथा पूरे परिवेश को भी प्रभावित करते रहते हैं। वस्तुस्थिति का ज्ञान तो शोध परिणाम से ही हो पायेगा।

माता–पिता के शैक्षणिक स्तर को जानने के लिए व्यक्तिगत सूचना पत्र में एक प्रश्न पूछा गया है। आपके माता–पिता का शौक्षणिक स्तर क्या है जो आपके लिए अपेक्षित हो उसे टीक चिन्ह लगा दें।

(क) मैट्रीक कक्षा या उससे नीचे।

(ख) स्नातक कक्षा तक।

(ग) स्नातकोत्तर कक्षा तक।

प्रतिदर्श :–

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य बच्चों में रचनात्मकता को मापने के उद्देश्य से किया गया। अतः यह अध्ययन बच्चों के एक आदर्श प्रतिदर्श पर किया गया। उत्तर बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के विद्यालयों में अध्ययनरत एवं आठवें वर्ग के छात्रों को अध्ययन के लिए चुना गया। इन सभी प्रयोज्यों का शैक्षणिक स्तर एक समान था। प्रतिदर्श में ऐसे ही लड़कों को सम्मिलित किया गया जिनकी आयु ग्यारह वर्ष थी प्रतिदर्श में क्षेत्रीय दोष को दूर करने के लिए सिर्फ शहरी क्षेत्र के स्कूलों को ही चुना गया।

प्रतिदर्श को सर्वथा दोषमुक्त करने के लिए निम्नलिखित सावधानियाँ बरती गई।

(क) प्रतिदर्श में सिर्फ लड़कों को ही चुना गया।

(ख) प्रतिदर्श में ऐसे प्रयोज्यों को रखा गया जिनकी आयु लगभग 11 वर्ष थी।

(ग) प्रतिदर्श में केवल ही ही शहर मुजफ्फरपुर को रखा गया क्योंकि शहरी क्षेत्र में विद्यालयों की संख्या बहुत अधिक है।

(घ) प्रयोज्यों के चयन में यथासंभव किसी भी प्रकार के पूर्वाग्रह को स्थान नहीं दिया गया।

(ड़) प्रतिदर्श में प्रयोज्यों की संख्या तीन सौ निर्धारित की गई।

(च) प्रयोज्यों के चुनाव में यह भी ध्यान रखा गया कि प्रयोज्य छात्रावास में रहने वाले और अपने गृह वासी दो ही प्रकार के हों।

(छ) प्रयोज्य में उच्च, मध्यम एवं निम्न तीनों ही वर्णों के छात्रों को सम्मिलित किया गया।

(ज) प्रतिदर्श में प्रयोज्यों के आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए तीनों ही आय वर्गों के प्रयोज्यों का चयन किया गया।

प्रतिदर्श को यथा संभव हर दोषों से मुक्त रखने का प्रयास किया गया है।

प्राक्कल्पना संख्या–चार :–

विभिन्न परिवारों में माता–पिता को निर्धारित करने के लिए बच्चों के प्रतिदर्श जिसका उल्लेख अध्याय चार में किया जा चुका है। पर व्यक्तिगत सूचना पत्र के प्रयोज्यों में उनके माता–पिता के शैक्षणिक स्तर के विषय में प्रश्न पुछा गया। प्राप्त प्रक्रिया के आधार पर माता–पिता के शैक्षणिक आधार को मान कर प्रयोज्यों की तीन श्रेणियाँ की गई। उच्च, मध्यम एवं निम्न। इन तीनों ही समूहों के विभाजन के लिए अभिभावकों के या माता7पिता के शैक्षणिक स्तर को आधार बनाया गया। स्नातकोत्तर शिक्षा उच्च समूह में स्नातन एवं इन्टरमिडियट मध्यम

समूह में तथा मैट्रिक तथा उससे कम शिक्षा प्राप्त समूह निम्न के अंतर्गत समाहित किये गये।

माता–पिता के शैक्षणिक स्तर पर आधारित इन तीनों समूहों में प्रति समूह प्रतिदर्श की संख्या एक सौ निर्धारित की गई। इन तीनों ही समूहों के बच्चों संबन्धित तृतीय अध्याय में की गई प्राक्कल्पना की गई थी कि उच्च शिक्षित समूह के माता–पिता के बच्चों में सृजनात्मक क्षमता अधिक पाई जाएगी वनिस्पत मध्यम एवं निम्न से। उच्च, मध्यम एवं निम्न शैक्षणिक समूहों के पृथम–पृथम प्राप्तांकों पर आधारित सांख्यिकीय विश्लेषणों की प्रामाणिकता को जानने के लिए उपयुक्त सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया। जिसका उल्लेख सारणी संख्या सात में वर्णित है।

सारणी संख्या–सात

तीनों ही समूहों के मध्यमानों के अन्तरों की सार्थकता।

स्मूह	संख्या	मध्यमान	प्रा0वि0	प्रा0वि0की त्रुटि	टी0 अनुपात	सार्थकता स्तर
उच्च	100	15.86	2.364	0.472	क–ख 9.00	0.01
मध्यम	100	9.7	2.168	0.433	क–ख 5.417	0.01
निम्न	100	6.34	2.130	0.426	क–ख 14.362	0.01

सारणी संख्या सात में वर्णित तीनों ही समूहों के सांख्यिकीय परिणामों के तुलनात्मक विवेचन से यह स्पष्ट हो रहा है कि उच्च समूह के बच्चों से प्राप्त प्राप्तांको का मध्यमान 15. 46, मध्यम समूह से प्राप्त प्रातांकों का मध्यमान 9.7 तथा

निम्न समूह से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 6.34 पाया गया है। उपर्युक्त तीनों ही समूहों की तुलनात्मक व्याख्या से यह स्पष्ट हो रहा है कि उच्च एवं मध्यम 5.76 पाया गया है और इन दोनों ही समूहों के आधार पर प्राप्त टी0 अनुपात 9.00 पाया गया है। जो 0.01 स्तर पर सत्यापित हो रहा है। इससे यह स्पष्ट होता है कि उच्च शिक्षित माता–पिता के बच्चों मे रचनात्मक क्षमताएँ अधिक पायी जाती हैं। उच्च एवं निम्न के बीच भी मध्यमानों का अन्तर 9.12 पाया गया है जो एक बहुत बड़ा अन्तर है। इसके आधार पर प्राप्त टी0 अनुपात 14.362 पाया गया है जो 0.01 स्तर पर बहुत अधिक है। यह परिणाम परिकल्पना को पूर्ण रूप से सत्यापित करता है। मध्यम एवं निम्न के बीच मध्यमानों का अन्तर 3.36 पाया गया है। इसके आधार पर प्राप्त टी0 अनुपात 5.517 पाया गया है। जो 0.01 स्तर पर सत्यापित हो रहा है।

डपर्युक्त निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि उच्च शिक्षित माता–पिता के बच्चों में सृजनात्मक या रचनात्मक क्षमताएँ अधिक विकसित रूप में पाई गई हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि बच्चों के रचनात्मक विकास पर माता–पिता के शिक्षा का स्पष्ट रूप से प्रभाव पड़ता है। उपर्युक्त अध्ययन से इसकी पुष्टि होती है।

Reference :-

Amato, Fred & Kuok, (1984) – Eddie C. (East West population Inst. Honolulu, HI) The Value of daughter & Sons: A comparative study of the sender preferences of parents, journal of comparative family studies, (sum), Vol. 15 (2), 299-318.

Biagyio, Maryk: Mohan Philipand Baldwin cynttia 1985 – (Indian state V. Terra Kaute) Relation ship among Attitude towards children woman liberation and personality characteristics, sex role (Jan) Vol.-12, (1-2), 47-12.

Brogan, Catherine L (1972) – (Smith coll. School for social work) changing perspectives on the role of women. Smith college studies in social work (Feb.) Vol. 42 (2) 155 – 173.

Bandana 1989. - A Study of Women Liberties in Relation to Perceived Parental Styles and some Personality variables, and Bihar University Thesis.

Cameron, James R. (1978). - Parental treatment, Children's temperament, and the risk of childhood behavioural problems, Vol. 48 (1) 140 – 147.

Conpbell, Robert, E and Horrocks, - A note on relationship, A ship between Students and parents Minne & oja Teacher Attitudes inventory scores Journal of Education Psycho, 1961 52 (4) 199 – 200.

Cooper J.B. 1966. - Two Scales for Parent evaluation Journal of genetic Psychology, 108, 49 -53.

Chaubey; Maheswar 2000. - Mano Samajik Sandarbha Main Nari Mukti, L.N. Mithila University Dar. Thesis.

Eysenck H.J. (1959). - The Manual of the Maudsley Personality inventory London: University of London Press.